KALA KA ADBHUT NAMUNA - BIKANER KI USTADKALA

कला का अद्‌भुत नमूना – बीकानेर की उस्ताकला

प्रो॰ किरन सरना [1] | तरुणा राजपुरोहित [2]

[1] प्रो॰ एवं विभागाध्यक्ष, विजुअल आर्ट विभाग, वनस्थली विद्यापीठ.

[2] रिसर्च एसोसिएट, डिजाइन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ.

राज्सथान प्रान्त के बीकानेर शहर में की जाने वाली ऊँट की खाल पर स्वर्ण मीनाकारी और भुनवत्त का कार्य 'उस्ता कला' के नाम से जाना जाता हैं। उस्ता कलाकारों द्वारा बनाई गई कलाकृतियाँ देश–विदेश में अत्यन्त प्रसिद्ध है।

इसमें ऊँट की खाल से बनी कुंप्पियाँ पर दुलर्भ स्वर्ण मीनाकारी का कलात्मक कार्य किया जाता है जो अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक होता है। शीशियाँ, कुंप्पियाँ, आईनों, डिब्बों, मिट्‌टी की सुराही आदि पर यह कला उकेरी जाती है। उँट की खाल पर सुनहरी मीनाकारी की इस अद्वित्तीय उस्ताकला का विकास पद्‌मश्री से 1986 में सम्मानित बीकानेर के सिद्धहरत कलाकार स्व. हिसामुद्‌दीन उस्ता ने किया था। उनको 1967 में राष्ट्रीय पुरस्कार से भी विभूषित किया गया था। बीकानेर में उस्ता मोहल्ले में आज भी अनेक कलाकार उस्ताकला का कार्य कर रहे है।

उस्ताकला को कई अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियाँ में प्रदर्शित किया जा चुका है। दिल्ली के प्रगति मैदान तथा अन्य बड़े शहरों में आयोजित होने वाले हस्तशिल्प मेलों में भी कई उस्ता कलाकार शामिल होते हैं यथा अपनी कला के जौहर का प्रदर्शन करते हैं। देश के विभिन्न राज्यों के शोरूम में भी उस्ता कलाकृतियाँ सुज्जित देखी जा सकती है। इस कला में सराहनीय कार्य के लिए हिसामुद्‌दीन उस्ता के शिष्य मोहम्मद हनीफ उस्ता को राष्ट्रीय पुरस्कार तथा मोहम्मद अजमल उस्ता और अजमल हुसैन उस्ता को राज्य स्तरीय पुरस्कार से नवाजा जा चुका है। पद्‌मश्री हिसामुद्‌दीन उस्ता के पौत्र मोहम्मद जमील उस्ता अभिनव प्रयोग कर इस कला के प्रचार–प्रसार के लिए कार्य कर रहे हैं। जमील उस्ता दो बार राजस्थान ललित कला अकादमी जयपुर के सदस्य रह चुके है तथा इस कला के नए आयाम खोजने में जुटे हैं। बीकानेर का केमल हाइड ट्रेनिंग सेन्टर' उस्ताकला का प्रशिक्षण संस्थान हैं।

उस्ता मूलरूप से चित्रकार थे। इन्हीं के नाम से इस कला का नामकरण हुआ और इसे उस्ता कला नाम से पहचान मिली। कहा जाता है कि बीकानेर के छठे राज्य रायसिंह तथा कर्णसिंह कुछ उस्ता चित्रकारों को मुगल दरबार से बीकानेर लाए थे। उन्हें राजकीय चित्रकार का ओहदा दिया गया। उन कलाकारों में उस्ता अली–रजा प्रमुख कलाकार थे। उस्ता अली रजा ने कर्णसिंह के शासनकाल में भगवान लक्ष्मी–नारायण के मन्दिर का चित्रांकन किया था। इसी प्रकार महाराजा अनूपसिंह के युग में रूकनुद्‌दीन ने रसिक प्रिया के 187 चित्र बनाए थे। इसके अलावा कई उस्ता चित्रकारों ने बीकानेर के महलों में विभिन्न प्रकार के चित्रों से छतों, मेहराबों, गुम्बदों आदि को बेमिसाल चित्रों से सज्जित किया था।

बीकानेर के दरबार हॉल चन्द्रमहल गैलरी, शीशमहल, अनूप महल, राज मन्दिर, लाल निवास, डूंगर निवार, सूरत निवास, भांडाशाह मंदिर आदि को चित्रकला उस्ताकला के नमूने हैं। उस्ता अली रज़ा शाह, मोहम्मद, उस्ताद ईशा, मुहम्मद रूकनुदीन, इब्राहिम शहाबुदीन, उस्ताद अब्दुल्ला, हाशिम, कासिम हसन रजा, शलाउदीन, हमीद, नत्थूजी बक्श, मुदाद बक्श, उस्मान, रहीम, इमामुद्‌दीन आदि कई कलाकार इस कला की लम्बी श्रृंखला में महत्वपूर्ण कड़ी रहे है। उस्ता जाति के कलाकारों ने इस कला को पीढ़ी दर पीढ़ी चलाते हुए सदियों तक सँजाए रखा तथा वे अपनी इस कला को महलों, हवेलियाँ, मन्दिरों इत्यादि को चित्रकला के चित्ताकर्षक, इन्द्रधनुषी रंग प्रदान करते रहे। कालान्तर में यही उस्ता कला ऊँट की खाल पर स्वर्ण मीनाकारी के रूप में विकसित हुई तथा उसने हस्तशिल्प के एक नई शैली को रूप दिया।

वर्तमान में मोहम्मद हनीफ उस्ता जी उस्ता कला के विकास में अविश्वसनीय प्रयत्न करनें में व्यस्त हैं। जहाँ मौका मिलता है वहाँ उस्ता कला के प्रचार–प्रसार में बढ चढ कर हिस्सा।